जंगल का दाह

स्वयं प्रकाश

मामा सोन अपने समय के प्रख्यात धनुर्धर थे। वे जंगल में रहते थे, लंगोटी पहनते थे और वनवासियों के बच्चों को तीर-कमान चलाना सिखाते थे। अपना धनुष और अपने बाण भी वे स्वयं बनाते थे। वनवासी खेती करना नहीं जानते थे। जंगल की ज़मीन भी ऐसी न थी कि जिस पर आसानी-से खेती की जा सके। उनकी आजीविका पशुपालन, वनोपज और शिकार से ही चलती थी। यह ज़रूरी था कि वनवासी, चाहे लड़का हो या लड़की, अपनी रक्षा और आजीविका के लिए तीर-कमान चलाना ज़रूर सीखें। मामा सोन को बच्चे घेरे रहते थे। वनवासी मामा सोन की बहुत इज़्ज़त करते थे और बच्चों की शिक्षा के लिए उनके पास भेजते समय बहुत-सा अनाज और सूखा मांस, पशुओं की खाल, बाँस से बनी घरेलू वस्तुएँ और जंगली कन्दमूल वगैरह ले आते थे।

मामा सोन बच्चों के लिए उनकी कद-काठी और ज़रूरत के अनुसार तीर-कमान बनाते और सबसे पहले उन्हें पक्षियों के नाम, आदतें, उनके आने के मौसम, बैठने के ठिकाने, उनकी प्रजाति की बढ़त-घटत का हिसाब और उनके खाद्य-अखाद्य होने की जानकारी, यह सब अपने शिष्यों को बताते। खुद आगे-आगे चलते और थोड़े ही दिनों में अपने शिष्यों को जंगल के चप्पे-चप्पे से परिचित करा देते। कुछ ही वर्षों में उनके शिष्य इतने कुशल हो जाते कि एक-एक तीर से चार-चार चिड़ियाँ गिरा देते। मामा सोन अपने शिष्यों को तीर-कमान बनाना भी सिखाते थे। किस शिकार के लिए कैसे तीर की ज़रूरत होगी, किस तरह का फाल चमड़ी को कितनी गहराई तक भेदेगा, कैसी प्रत्यंचा तीर को कितनी दूर तक फेंकेगी आदि। सुना है, मामा सोन को ऐसे तीर बनाना भी आता था जो लक्ष्य भेदकर वापस कमान में आ जाते थे; देखा तो किसी ने नहीं, लेकिन इस पर अविश्वास करने का भी कोई कारण नहीं था। धीरे-धीरे मामा सोन की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई।

* * *

एक दिन एक राजकुमार अपने नौकर-चाकर व सैनिकों के साथ जंगल में शिकार खेलने आया। राजकुमार को न शिकार का कोई अनुभव था, न उसमें पशु-पक्षियों के साम्राज्य में प्रवेश करने की विनम्रता थी। नतीजा यह हुआ कि राजकुमार

और उसके साथी हो-हल्ला करते हुए और ललकारते हुए जंगल में घुसे। चिड़ियों ने इन अजनबियों की अजीबोगरीब हरकतों को सन्देह के साथ देखा और इधर से उधर तक उड़कर और शोर मचाकर सारे जंगल को सावधान कर दिया। अचानक आए खतरे की सूचना पाकर सारे पशु-पक्षी अपनी-अपनी कोटरों, खोहों, सबलों, घोंसलों, गुफाओं में दुबक गए। राजकुमार और साथ के शिकारी शिकार की तलाश में खाली हाथ भटकते रहे। लेकिन शेर किसी से क्यों डरे? तू राजा है तो हम भी राजा हैं। तू राजा का बेटा है तो हम भी हैं। तो शेर पहुँच गया राजकुमार के सामने और सहज अभिवादन के भाव से दहाड़ा। खुले शेर को देखकर और उसकी दहाड़ सुनकर राजकुमार के सारे साथी भाग गए और राजकुमार चीखने-चिल्लाने लगा। राजकुमार की चीख-चिल्लाहट को आक्रमण की ललकार समझकर शेर ने राजकुमार पर हमला कर दिया। ठीक इसी समय झाड़ी के पीछे छिपे मामा सोन के एक शिष्य ने शेर पर तीर चलाकर

उसका ध्यान बटाया और राजकुमार को सम्भलने का मौका दिया। वह शेर को भगाता-भगाता राजकुमार से बहुत दूर ले गया। इस तरह उस दिन राजकुमार की जान बच गई।

मामा सोन के शिष्यों ने राजकुमार की सेवा-सुश्रूषा की और उसे सकुशल उसके राज्य में छोड़ आए। राजकुमार ने घर जाकर सारी विगत राजा को बताई। राजा बहुत खुश हुआ परन्तु उसे बहुत दुख भी हुआ। खुश इसलिए हुआ कि उसके बेटे की जान बच गई और दुखी इसलिए कि बेटा इतना बड़ा ढोर हो गया लेकिन अपनी खुद की भी रक्षा नहीं कर सकता तो राज्य की और राज्यवासियों की रक्षा कैसे कर पाएगा! उस दिन राजा ने राजकुमार को खूब लताड़ा। राजा की लताड़ सुनकर राजकुमार सोच में पड़ गया और आखिर उसने ठान लिया कि अब वह भी धनुर्विद्या सीखेगा और मामा सोन से ही सीखेगा।

राजा ने मामा सोन को अपने दरबार में बुला भेजा। मामा सोन ने पहले तो संकोच किया, फिर इस शर्त पर राजकुमार को धनुर्विद्या सिखाने पर राज़ी हो गए कि इसके लिए राजकुमार को जंगल में ही रहना होगा। राजा को भला इस पर क्या आपत्ति होती? मामा सोन ने विद्यारम्भ की तिथि निर्धारित की और जंगल लौट आए।

* * *

कुछ दिनों बाद राजधानी से बेलदार, मिस्त्री, लोहार, सुतार, संगतराश, कारीगरों व मजदूरों का एक बड़ा दल जंगल में आता दिखाई दिया।

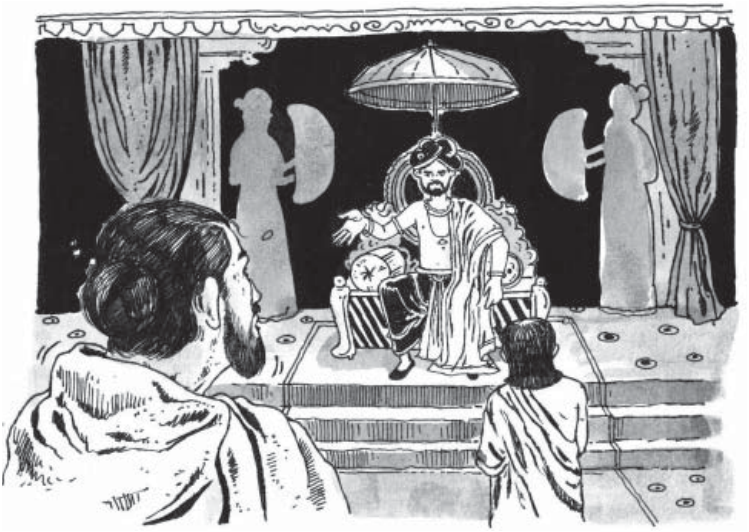

पता चला, जंगल के बीच दो सर्वसुविधा सम्पन्न महल बनाए जाएँगे जिनमें रहकर राजकुमार धनुर्विद्या सीखेंगे। लेकिन दो महल क्यों? पता चला कि एक राजकुमार के लिए और दूसरा आचार्य शोण के लिए। यह आचार्य शोण कौन हैं? मामा सोन ही अब आचार्य शोण हैं। सिर्फ इतना ही नहीं, मामा सोन के लिए उपहारों की बैलगाड़ियाँ भी आने लगीं। इनमें जूते, धोती, मुकुट, शिरस्त्राण, मणिमालाएँ, आसन, आसन्दी, पलंग और न जाने क्या-क्या अल्लम-गल्लम चीज़ें थीं। सच बात है! लंगोटी लगाने वाले मामा सोन राजकुमार के गुरु कैसे हो सकते हैं? इन अभूतपूर्व गतिविधियों से जंगल की शान्ति भंग होने लगी, पेड़ कटने लगे, पानी-हवा दूषित होने लगे, पशु-पक्षी डरने-छिपने लगे; उग्र और हिंसक होने लगे। राजा के आदमियों के उत्पात से वनवासी भी परेशान हो गए और अपना घर छोड़-छोड़कर भागने लगे।

कोढ़ में खाज यह कि राजा ने आज्ञा निकालकर उस क्षेत्र में शिकार पर प्रतिबन्ध लगा दिया ताकि सारे पशु-पक्षियों को वनवासी ही न मार लें, कुछ राजकुमार के लिए भी बचे रहें। कहा यह गया कि वन्य जन्तुओं का संरक्षण आवश्यक है। राजा ने यह भी आज्ञा प्रसारित कर दी कि अब से आचार्य शोण केवल राजकुमारों को धनुर्विद्या सिखाएँगे। पड़ोसी राज्यों को सूचना भिजवा दी गई कि अगली वसन्त ऋतु से हमारे यहाँ धनुर्विद्या प्रशिक्षण की व्यवस्था आरम्भ हो रही है। यदि आप चाहें तो इतना कर व इतना दान हमारे राजकोष में जमा करवाकर अपने राजकुमारों को इतनी अवधि के लिए आचार्य शोण के आश्रम में भेज सकते हैं। अब मामा सोन की कुटिया में अशर्फियों के टोकरे तो भरे हुए थे लेकिन अब कोई उन्हें अनाज, सूखा मांस, पशुओं की खाल, बाँस की बनी वस्तुएँ और जंगली कन्दमूल लाकर नहीं देता था। इन चीज़ों की व्यवस्था मामा सोन को स्वयं करनी पड़ती थी। वह कसमसा तो बहुत रहे थे लेकिन कुछ कर नहीं पा रहे थे। कुटिया के बाहर सैनिकों का पहरा था। वह जहाँ कहीं भी जाते, गुप्तचर उन पर नज़र रखते थे। हारकर उन्होंने खुद को नियति के हवाले कर दिया।

* * *

एक दिन राजकुमार ने मामा सोन से पूछा, "सम्पूर्ण धनुर्विद्या सीखने में मुझे कितना समय लगेगा?"

मामा सोन ने कहा, "सम्पूर्ण का तो मुझे नहीं मालूम, लेकिन सीखने के लिए तो पूरी उम्र भी कम है। सीखना तो जीवन भर ही चलता रहता है।"

राजकुमार ने पूछा, "आपको जितना आता है उतना सब मुझे कितने दिन में सिखा देंगे?"

मामा सोन ने कहा, "यह तो सीखने वाले की लगन पर निर्भर

करता है। पर फिर भी पूनम के छह चाँद तो मान ही लो।"

राजकुमार ने पूछा, "क्या अवधि कुछ कम नहीं हो सकती?"

मामा सोन ने कहा, "खूब मन लगाकर सीखोगे तो हो सकता है पाँच चाँद में ही सीख जाओ। पर उसके बाद भी अभ्यास जारी रखना होगा। सब कुछ अभ्यास पर ही निर्भर करता है।"

राजकुमार ने कुछ सोचने के बाद कहा, "मैं तुम्हें इस काम के लिए एक महीने से ज़्यादा समय नहीं दे सकता। एक महीने में जितना जानते हो फटाफट मुझे सिखा देना, वरना मैं दूसरा गुरु ढूँढ़ लूँगा।"

राजकुमार इतना कहकर अपने निर्माणाधीन भवन की ओर जाने लगा।

मामा सोन ने उसे पुकारकर रोका और पास जाकर कहा, "इससे पहले की विद्यारम्भ का दिन आए, मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ घूमकर पूरा जंगल अच्छी तरह देख लो।"

"जंगल के बारे में गुप्तचरों ने मुझे सब कुछ बता रखा है।"

"फिर भी, अपनी आँखों से देखने की तो बात ही कुछ और होती है।"

"देखना क्या है? जंगल में होता क्या है? पेड़, जैसे यहाँ हैं वैसे ही वहाँ भी होंगे।"

"शिकारी को जंगल के चप्पे-चप्पे से परिचित होना चाहिए। कहाँ दलदल है, कहाँ सूखी ज़मीन, कहाँ गहरा पानी है, कहाँ जानवरों का पानी पीने का स्थान, कहाँ मधुमक्खियों के छत्ते हैं, कहाँ चींटियों की बाम्बियाँ, कहाँ पेड़ों पर पक्षियों ने घोंसले बनाए हैं, कहाँ सियार व लोमड़ी ने मान्द में बच्चे जने हैं। किस मौसम में कौन से पक्षी आते हैं और कब, किसका, कहाँ शिकार करना चाहिए। अपनी झोंक में शिकार के पीछे भागते हुए यदि तुमसे किसी निर्दोष मासूम का घरौन्दा दब गया, घोंसला टूट गया, छत्ता बिखर गया या सबल धँस गया तो तुम मुसीबत में आ जाओगे। एक छोटी-सी जंगली मक्खी भी तुम्हारी जान ले सकती है।"

मामा सोन की बात सुनकर राजकुमार ने लापरवाही से कहा, "मुझे कौन-सा हमेशा जंगल में रहना है? मैं तो अपनी राजधानी में रहूँगा, जहाँ सुख ही सुख हैं। केवल कभी-कभी जब सुखों से ऊब जाऊँगा, अपने साथियों के साथ यहाँ आ जाया करूँगा, आखेट क्रीड़ा के लिए।"

मामा सोन को आश्चर्य हुआ। उन्होंने तुरन्त पूछा, "आखेट को तुम्हारी भाषा में क्रीड़ा कहते हैं? हमारी तो यह आजीविका है। हम तो अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए आखेट करते हैं। वह भी हमें एक ही दिन नहीं करना होता है, इसलिए इस बात का भी ध्यान रखते हैं कि किसको मारना है, किसको नहीं

मारना है। हमारे आखेट से पशुओं की संख्या कम नहीं होती..."

मामा सोन की बात काटकर राजकुमार बोला, "आजीविका थी, अब नहीं रहेगी। आखेट पर प्रतिबन्ध लगाया जा चुका है। अब तो मैं ही मारूँगा जितने भी मारूँगा और जब सिर्फ मुझे ही मारने हैं तो कितने भी मारूँ, क्या फर्क पड़ता है?"

राजकुमार की बात सुनकर मामा सोन को धक्का लगा। वे दुखी मन से लौट गए। अगली सुबह राजकुमार के नवनिर्मित महल में गए और बोले, "कल से तुम्हारी शिक्षा शुरू हो जाएगी। कल ब्रह्म मुहूर्त में उठना और तैयार होकर मेरे पास आना। हम व्यायाम करेंगे, वनदेवी की पूजा करेंगे और अपने तीर-कमान लेकर प्रशिक्षण स्थल चलेंगे। रोज़ यही करना होगा।"

"व्यायाम क्यों? मुझे धनुर्विद्या सीखनी है, मल्लविद्या नहीं। और जल्दी उठने की तो मुझे आदत ही नहीं है। फिर भी, कोशिश करूँगा।" राजकुमार ने अरुचिपूर्वक कहा। मामा सोन जाने लगे तो राजकुमार मन ही मन बड़बड़ाया, "कल को कहेंगे लंगोटी लगाकर घूमना पड़ेगा। लगता है पूरा जंगली बनाकर छोड़ेंगे।"

* * *

आखिर विद्यारम्भ का दिन आया। वनदेवी को प्रणाम करके मामा सोन और राजकुमार ने अपने-अपने धनुष-बाण उठाए और जंगल के भीतर एक अपेक्षाकृत खुले स्थान पर आ गए। मामा सोन ने कहा, "तो चलो, चिड़ियों से ही शुरू करते हैं। सामने पेड़ पर ढेर सारी चिड़ियाँ बैठी हैं। इनमें से वह नीली वाली चिड़िया देखते हो? वह अपनी तीखी-लम्बी चोंच से दूसरी चिड़ियों के अण्डे फोड़ देती है। उसे मार गिराओ।"

राजकुमार ने तीर चलाया। एक भी चिड़िया न गिरी, न उड़ी। उसने मायूसी से मामा सोन को देखा।

मामा सोन ने कहा, "कोई बात नहीं। पेड़ पर सैकड़ों चिड़ियाँ हैं। किसी एक को निशाना बनाकर तीर चलाओ।"

राजकुमार ने तीर चलाया। तीर एक डाली से जा लगा। सारी चिड़ियाँ उड़ गईं।

"लेकिन ये तो हिलती हैं," राजकुमार ने परेशान होकर कहा।

"कोई बात नहीं, आज घूमते हैं," मामा सोन ने कहा।

दूसरे दिन मामा सोन राजकुमार को फिर उसी जगह ले गए। आज भी उस पेड़ पर ढेरों चिड़ियाँ बैठी थीं, लेकिन एक भी चिड़िया हिलडुल नहीं रही थी।

मामा सोन ने राजकुमार से कहा, "इनमें से किसी भी एक को गिरा दो।"

राजकुमार ने एक-एक करके सात तीर चलाए, लेकिन एक भी चिड़िया नहीं गिरी। मामा सोन ने ठीक से तीर

पकड़ना, प्रत्यंचा ठीक से खींचना, निशाना ठीक से लगाना आदि सिखाया, पर सब बेकार। फिर मामा सोन ने स्वयं निशाना लगाया। एक साथ दस चिड़ियाँ गिर गईं। राजकुमार ने पास जाकर देखा। सब नकली थीं। वह मायूस हो गया।

"चिड़ियाँ बहुत छोटी-छोटी हैं।" राजकुमार बोला।

"कोई बात नहीं, देखा जाएगा। आओ आज इस तरफ घूमते हैं।"

वह दिन भी तीर-कमान उठाए-उठाए घूमने में ही निकल गया। अगली सुबह फिर दोनों उसी स्थान पर पहुँचे। राजकुमार ने देखा कि पेड़ पर एक मोटे-ताज़े मुर्गे जितनी बड़ी नकली चिड़िया लटक रही है। मामा सोन ने कहा, "इस पर दस तीर चलाओ। दस में से एक-न-एक तीर तो इसे गिरा ही देगा।" राजकुमार ने दस तीर निशाना साधकर लगाए, लेकिन मोटी चिड़िया जहाँ की तहाँ थी।

"यह बहुत ऊपर है," राजकुमार ने कहा। "इतना ऊपर निशाना साधने की कोशिश में मेरा हाथ काँप जाता है।"

"कोई बात नहीं। इसका भी कुछ उपाय करेंगे। चलो, घूमने चलते हैं। आज उस तरफ।"

राजकुमार ऊबने लगा। अगले दिन मामा सोन ने एक पटिए पर एक बड़ी-सी चिड़िया बनाकर ज़मीन पर रख दी और राजकुमार को कहा, "सौ

कदम दूर से चिड़िया की आँख पर निशाना साधकर दस तीर चलाओ।"

राजकुमार ने दस तीर चलाए जिनमें से तीन ही चिड़िया को लगे। आँख पर तो एक भी नहीं लगा। राजकुमार गुस्से से पाँव पटकने लगा। उसने धनुष भी तोड़ दिया। मामा सोन ने उसे समझाया-बुझाया और कहा, "चिड़िया का शिकार करने चले हो तो चिड़िया तो छोटी ही होगी, वह बैठेगी भी पेड़ पर ही और हिलेगी क्या, उड़ेगी भी! क्या तुम यह सोचते हो कि चिड़िया को उड़ना नहीं चाहिए? क्या तुम यह चाहते हो कि तुम्हारा शिकार परम आज्ञा-कारितापूर्वक तुम्हारे सामने मरने के लिए स्थिर बैठा रहे?"

राजकुमार को कुछ समझ में नहीं आया। उसने घूमने जाने से भी मना कर दिया और अपने नए महल में जाकर सो गया।

अगली सुबह जब राजकुमार मामा सोन के साथ धनुर्विद्या सीखने के स्थान पर पहुँचा तो उसने देखा कि कुछ सौ कदम दूर ज़मीन पर एक बड़ा-सा खाली तख्ता खड़ा है। उसे समझ में नहीं आया कि यह क्या माजरा है।

मामा सोन ने राजकुमार से कहा, "यहाँ खड़े होकर इस तख्ते पर दस तीर चलाओ।"

राजकुमार ने ऐसा ही किया। दस में से नौ तीर तख्ते पर लगे और एक छिटक गया। तब मामा सोन ने ज़मीन पर से एक कोयले का टुकड़ा उठाया और तख्ते पर जहाँ-जहाँ राजकुमार का तीर लगा था, वहाँ-वहाँ एक चिड़िया बना दी।

वे बोले, "तुम्हारे लिए फिलहाल यही ठीक रहेगा। अब तुम कह सकते हो कि आज तुमने दस में से नौ चिड़ियाँ मार गिराईं। कुछ दिन इसी

का अभ्यास करना। आओ, अब घूमने चलते हैं। आज मैं तुम्हें हुदहुद दिखाऊँगा। वह आई हुई है।"

दो दिनों बाद राजा का भेजा मंत्री यह जानने आया कि राजकुमार का प्रशिक्षण कैसा चल रहा है। उसे बता दिया गया कि बहुत अच्छा चल रहा है। एक महीने भर की समाप्ति पर भी राजकुमार को बस इतनी ही धनुर्विद्या आ पाई कि वह तख्ते पर तीर चलाए और दस में से नौ चिड़ियाँ मार गिराए।

* * *

एक महीना पूरा होने पर राजा हाथी, घोड़ों, मंत्री, कारिन्दों और एक सैनिक टुकड़ी के साथ स्वयं बेटे का धनुर्विद्या प्रशिक्षण देखने आया। राजा की सवारी के जुलूस के जंगल में आने की खबर नन्हीं चिड़ियाओं ने दूर-दूर तक फैला दी। राजा देखते ही समझ गया कि मामा सोन ने राजकुमार की शर्तों पर उसे धनुर्विद्या सिखाने से एक तरह से साफ मना कर दिया है। राजा को गुस्सा तो अपने बेटे की नालायकी पर आ रहा था, लेकिन जो भी हो, वह उसका बेटा ही नहीं, राजगद्दी का उत्तराधिकारी और भावी राजा भी था। इसलिए उसे कुछ कहने की बजाए राजा ने मामा सोन की मुश्कें कसवा दीं और बेटे से कहा, "आज तेरा गुरु ही तेरा तख्ता है। इसी पर तीर चला। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि यदि तू नहीं सीख पाया तो दूसरा कोई भी मामा सोन की धनुर्विद्या न सीख पाए।"

मामा सोन जानते थे कि एक-न-एक दिन यह होगा और वे मन ही मन इसके लिए तैयार भी थे। राजकुमार धनुर्विद्या में एकदम कोरा सही लेकिन तख्ते पर 'दस में से नौ' चिड़ियाँ तो मार ही लेता था। फिर यहाँ तो एक जीता-जागता मनुष्य था। मनुष्य से बड़ा कौन-सा लक्ष्य हो सकता है! खासकर जब उसकी मुश्कें बन्धी हों, और पीठ तख्ते से सटी हो, चारों तरफ सहस्त्र सैनिकों का पहरा हो और सरपरस्ती के लिए पीठ पर राजा का हाथ भी हो। राजकुमार ने कमान पर तीर चढ़ाया और साँस रोककर निशाना साधा। लेकिन इससे पहले कि तीर राजकुमार की कमान से निकलता, चारों तरफ के घने पेड़ों के पीछे से सैकड़ों तीरों की वर्षा शुरू हो गई। राजा के सैनिकों में भगदड़ मच गई और वे छिपने की, और मोर्चा लेने की जगह ढूँढ़ने लगे। कुछ ही देर बाद चारों तरफ से भालू, बन्दर, सियार, बाघ, बघेरे, साँप, बिच्छू, ततैया, मधुमक्खी, चील, बाज, हिरण, बारहसिंघा, लकड़बग्घा, ऊदबिलाव, गेण्डे, भैंसे, जिराफ, हाथी निकल आए और भयानक गर्जनाएँ करते हुए राजा के सैनिकों को उठा-उठाकर इधर से उधर फेंकने लगे। जंगल के इस अचानक और अप्रत्याशित आक्रमण से राजा की प्रशिक्षित सैन्य टुकड़ी के भी पैर उखड़ने लगे।

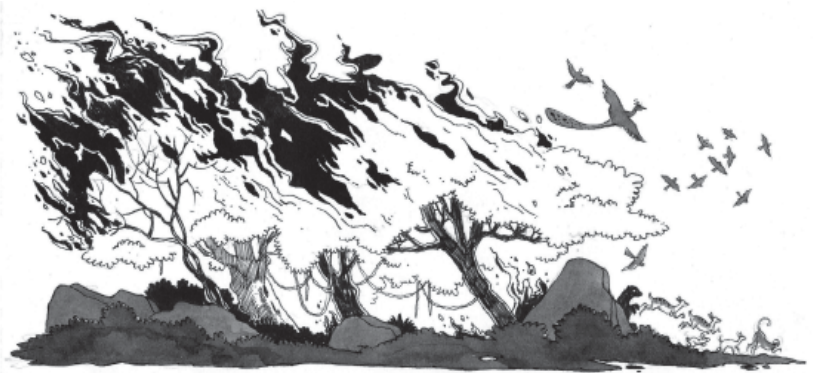

"बचाओ-बचाओ" की चीखों के बीच सैनिक उल्टे पैर भागने लगे। कुछ वफादार सैनिकों ने राजा और राजकुमार को एक घेरे में ले रखा था। जब उन्होंने देखा कि इस हमले का मुकाबला नहीं कर पाएँगे तो वे भी घायल राजा और राजकुमार को लेकर भाग गए। लेकिन कमीने जाते-जाते जंगल में आग लगा गए। वन के पशु-पक्षी और वनवासी राजा की फौज से तो टक्कर ले सकते थे, लेकिन अग्नि देवता के आगे उनका कोई बस नहीं चल पाता था। अफसोस कि न मामा सोन को बचाया जा सका, न उनकी धनुर्विद्या को। अगर वहाँ कुछ बचा तो वह बस राख ही राख थी। राजकुमार का महल भी जलकर राख हो गया था। राजा और उसके वफादार सैनिक भी।

* * *

कहने वालों ने कहा कि बरसात के बाद वहाँ वन्य वनस्पति और ज़्यादा लहलहाकर फूटेगी। कहने वालों ने यह भी कहा कि वनवासियों के बीच से ही एक दिन फिर कोई मामा सोन जन्म लेगा। ऐसा हुआ या नहीं, पता नहीं। आज मामा सोन के वंशज शहर में बाँस की टोकरियाँ, तार के छींके और लकड़ी के तोते-चिड़ियाँ आदि बनाकर बेच रहे हैं। सुना है, उनके इलाके में कोई बड़ा बाँध बन रहा है जिससे देश की बड़ी तरक्की होगी। मामा सोन के वंशजों और शिष्यों को जंगल से निकाल दिया गया है।

स्वयं प्रकाश (1947-2019): हिन्दी के सुप्रसिद्ध कथाकार एवं उपन्यासकार थे। कई महत्वपूर्ण किताबों का हिन्दी अनुवाद। वे हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में साठोत्तरी पीढ़ी के बाद के जनवादी लेखन से सम्बद्ध रहे।

सभी चित्र: शुभम लखेरा: स्वतंत्र चित्रकार हैं। गवर्नमेंट फाइन आर्ट कॉलेज, ग्वालियर से पेंटिंग में स्नातक। रियाज़ अकादमी, भोपाल से इलस्ट्रेशन का कोर्स। पिछल 6 सालों से बाल पत्रिकाओं के लिए चित्रकारी कर रहे हैं। डकबिल, तूलिका, चाइल्ड फंड इंडिया, एनसीईआरटी, नवनीत, एकलव्य, एलएलएफ, रूम टू रीड जैसे कई प्रकाशनों के साथ काम किया है। फिलहाल, अपने शहर चंदेरी, म.प्र. में रह रहे हैं।